सन्देश

उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय अपनी स्थापना के उपरान्त उत्तर प्रदेश की समृद्ध परम्पराओं पर आधारित ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में विद्या की अभिवृद्धि कर रहा है। यह विश्वविद्यालय मानवीय संसाधनों की उत्तरोत्तर उन्नति और उत्कृष्टतम उपलब्धि प्राप्त करने की ओर अग्रसर है।

दूरस्थ शिक्षा अत्यन्त लचीली तथा नई तकनीकी को अपनाने के लिए सक्षम है। स्थापना के उपरान्त विश्वविद्यालय ने एक लम्बी विकासयात्रा तय की है। आने वाला समय सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.) का है। इसी को ध्यान में रखकर आई.सी.टी. से जुड़ी कई कार्य योजनाएं तैयार की गयी हैं। हमें अपने शिक्षार्थियों को ज्ञान सम्पन्न बनाना है जिससे वे विश्व के अन्य विश्वविद्यालयों के छात्रों से किसी भी स्तर पर पीछे न रहें। इसके लिए सत्र 2012–2013 से छात्र केन्द्रित व्यवस्था को अत्यन्त लचीला रूख प्रदान किया गया है। **'वर्ष पर्यन्त प्रवेश'** की नवाचारी प्रक्रिया का पहली बार प्रयोग किया जा रहा है। इस नई व्यवस्था से उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए लोगों को पर्याप्त अवसर प्राप्त होंगे। उत्कृष्ट पाठ्यसामग्री तैयार करवाई जा रही है। पुराने पाठ्यक्रम को अद्यतन रूप दिया जा रहा है। ऑनलाइन शिक्षा की तरफ विश्वविद्यालय अग्रसर है। विश्वविद्यालय परिसर में वाई–फाई सुविधा प्रदान की गयी है। ई–मेल और इंटरनेट का उपयोग करके अधिकाधिक छात्रों से जुड़ने की मुहिम में तेजी आई है। प्रगति के पथ पर आगे बढ़ते हुए आज यह विश्वविद्यालय राजर्षि टण्डन जी के संकल्पों को साकार करते हुए छात्रों के द्वार तक शिक्षा की किरणें पहुंचाने में अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

मैं समझता हूं कि ज्ञान सम्पन्न समाज की स्थापना के लिए बौद्धिक सम्पदा का निवेश आवश्यक है। हम प्रयास कर रहे हैं कि इस विश्वविद्यालय से ऐसे मेधावी छात्र निकलें जिन पर हम गर्व कर सकें। इसके लिए शिक्षार्थियों के सर्वांगीण विकास पर आधारित कार्यक्रमों को प्रारम्भ करने की योजना को साकार किया जा रहा है। निश्चित ही यह विश्वविद्यालय आने वाले दिनों में एक आदर्श विश्वविद्यालय के रूप में अपनी पहचान बनाने में सफल होगा।

मैं आशा करता हूँ कि विश्वविद्यालय की **प्रगति** का यह सफर आगे बढ़ता रहेगा। गत एक वर्ष में हम जो कुछ भी नया कर पाए उसके पीछे इस विश्वविद्यालय के अधिकारियों, शिक्षकों, कर्मचारियों, छात्रों, क्षेत्रीय केन्द्रों तथा अध्ययन केन्द्रों के समन्वयकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

अंत में, मैं सभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए 'प्रगतिः एक दृष्टि' के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

प्रोफेसर ए.के. बख्शी
कुलपति

नामांकन, अध्ययन केन्द्र एवं कार्यक्रम में वृद्धि

Session-wise Students Enrolment

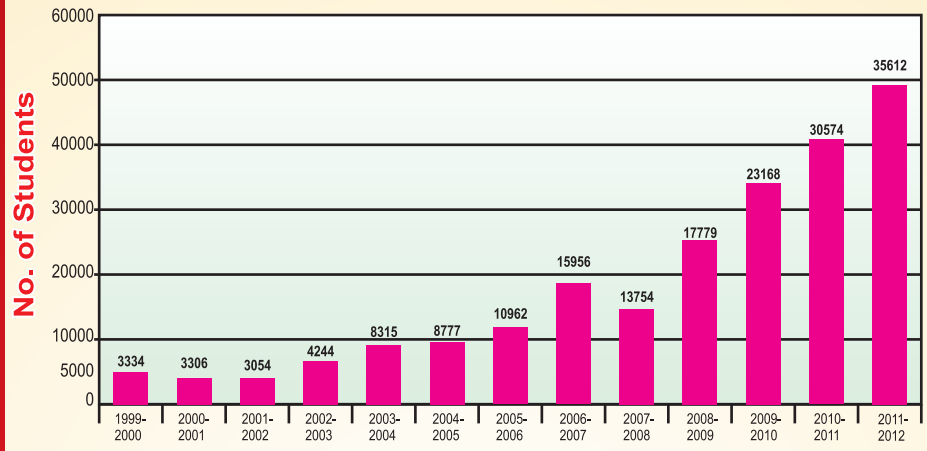

Session-wise Number of Study Centres

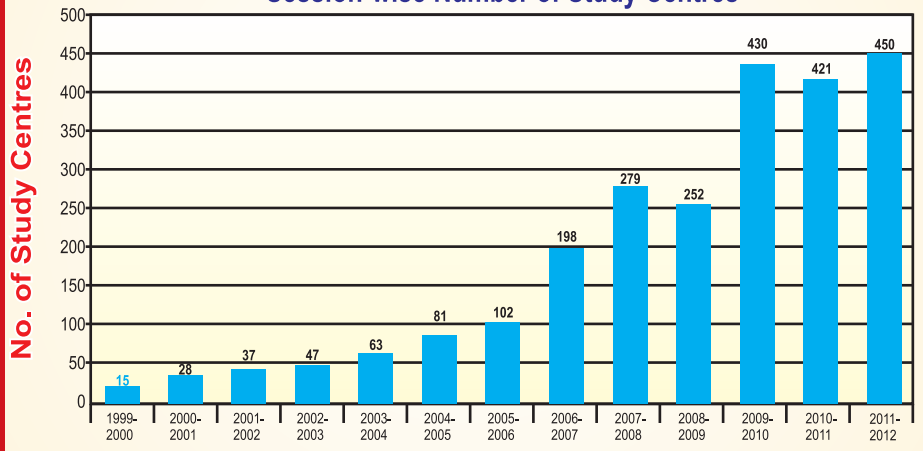

Session-wise Number of Programmes

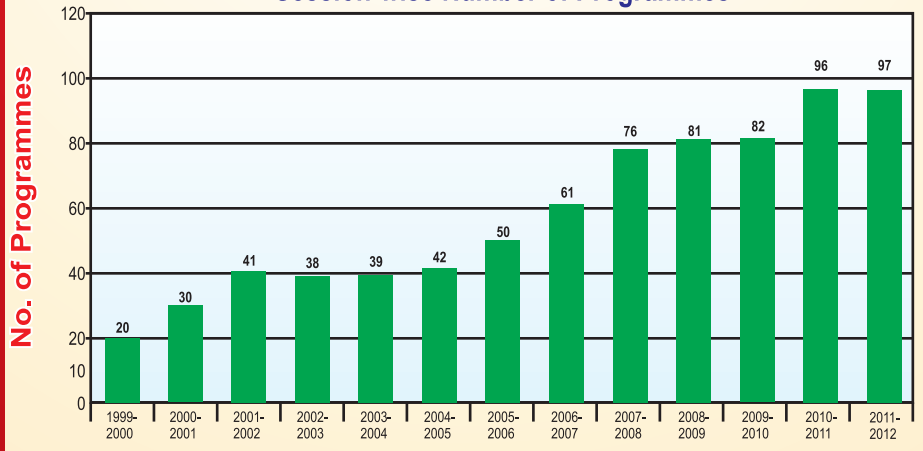

प्रगति : एक दृष्टि

सत्र 2011–12 में विश्वविद्यालय ने शैक्षिक प्रगति के क्षेत्र में एक नया इतिहास रचा है। इस वर्ष विश्वविद्यालय ने कई विशिष्ट उपलब्धियाँ अर्जित की हैं। विश्वविद्यालय के लिए गर्व का विषय है कि **प्रो.ए.के.बख्शी** जैसे अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक को महामहिम राज्यपाल, उ.प्र. द्वारा इस विश्वविद्यालय का कुलपति नियुक्त किया गया।

माननीय कुलपति जी ने इस वर्ष के प्रारम्भ से ही विश्वविद्यालय की प्रगति एवं उन्नति पर विशेष ध्यान दिया है। इसके अन्तर्गत सत्र 2012–2013 से **'Any One, Any Time, Any Where'** की संकल्पना के द्वारा उ.प्र. के छात्रों को शिक्षा प्राप्त करने का विशेष लाभ प्रदान करने का प्रयास किया गया है। इस व्यवस्था के द्वारा शिक्षार्थी **'वर्ष पर्यन्त प्रवेश'** ले सकता है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में दूरस्थ पद्धति से इसके दूरगामी सार्थक परिणाम शीघ्र ही सामने आएंगे। इससे उच्च शिक्षा की आकांक्षा रखने वाले छात्रों को शिक्षा ग्रहण करने के उत्तम एवं गुणवत्तापरक अवसर 'वर्ष पर्यन्त' सुलभता से प्राप्त हो सकेंगे।

* शैक्षणिक क्रिया–कलापों के समयबद्ध संचालन के लिए विश्वविद्यालय ने इस वर्ष एक **शैक्षणिक कैलेण्डर** का निर्माण किया है। जिसे प्रवेश सूचना विवरणिका में भी मुद्रित किया गया है, जिससे शिक्षार्थी अपने सभी शैक्षिक क्रिया कलापों को समयबद्ध ढंग से सम्पादित कर सकें और उन्हें सूचना के अभाव में कठिनाईयों का सामना न करना पड़े।
* छात्रहित का ध्यान रखते हुए इस सत्र से विश्वविद्यालय ने **पाठ्य सामग्री** शिक्षार्थियों को प्रवेश के एक माह के अन्दर सीधे उनके द्वार तक पंजीकृत डाक के माध्यम से भेजने की व्यवस्था सुनिश्चित की है।

इस व्यवस्था से शिक्षार्थी को अध्ययन के लिए पर्याप्त समय मिलेगा। उनके अधिन्यास कार्य समय से पूर्ण होंगे तथा परामर्श सत्रों का अनुकूलतम लाभ भी उन्हें प्राप्त होगा। इस नवीन व्यवस्था से विश्वविद्यालय के प्रति लोगों का विश्वास बढ़ेगा और शिक्षार्थी इस संस्था में प्रवेश लेने हेतु अभिप्रेरित हो सकेंगे।

* वर्तमान सत्र से प्रत्येक केन्द्र पर **परामर्श सत्रों** के संचालन की व्यवस्था को और सुदृढ़ किया गया है। नवीन व्यवस्था में छात्रहित को सर्वोपरि मानते हुए विश्वविद्यालय द्वारा निर्णय लिया गया है कि किसी भी कार्यक्रम में मात्र एक शिक्षार्थी होने पर भी परामर्श सत्र का आयोजन किया जाएगा, जिससे प्रत्येक शिक्षार्थी को विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत्त सुविधाओं का लाभ मिल सकेगा।
* विश्वविद्यालय में **परामर्श प्रकोष्ठ** (काउंसिलिंग सेल) का गठन किया गया है। यह सेल नव प्रवेशार्थियों को उचित परामर्श देगा और प्रदेश में आच्छादित 350 से भी अधिक अध्ययन केन्द्रों पर परामर्श–सत्र सम्बन्धी गतिविधियों के सफल संचालन की व्यवस्था सुनिश्चित करेगा।
* इस सत्र में **अधिन्यास प्रकोष्ठ** की स्थापना भी की गई है। अधिन्यास सम्बन्धित कठिनाइयों को दूर करने में यह सेल सक्रिय भूमिका अदा कर रहा है। अधिन्यास कार्य द्वारा सत्रीय मूल्यांकन को और अधिक व्यवस्थित रूप देते हुए अधिन्यास प्रश्न पत्रों को सत्र 2013–14 से चार सेट में तैयार कराने का निर्णय लिया गया है, जिससे अधिन्यास कार्य में मौलिकता आएगी।
* विश्वविद्यालय द्वारा **अधिन्यास मूल्यांकन** में शुचिता हेतु परीक्षकों की अर्हता पर विशेष बल देते हुए, अधिन्यास पर टिप्पणी अनिवार्य रूप से लिखे जाने के निर्देश दिए गए हैं। प्रतिपुष्टि हेतु मूल्यांकित अधिन्यास

पुस्तिका शिक्षार्थी को वापस करने पर विशेष जोर दिया गया है जिससे शिक्षार्थी अपनी कमियों को जानकर उनमें सुधार हेतु अभिप्रेरित हो सके।

* जुलाई सत्र की **परीक्षाओं** का सभी 91 केन्द्रों पर शांतिपूर्ण ढंग से आयोजन किया गया। छात्र केन्द्रित व्यवस्था के अन्तर्गत परीक्षा प्रवेश पत्रों को विश्वविद्यालय वेबसाइट पर भी उपलब्ध कराया गया। परीक्षा में पारदर्शिता एवं गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखा गया। इसके लिए पर्यवेक्षकों एवं उड़नदस्ते की व्यवस्था सुदृढ़ की गई। मा. कुलपति जी ने स्वयं भी समय–समय पर औचक निरीक्षण किया।

* विश्वविद्यालय द्वारा जनवरी सत्र (2011–2012) की **परीक्षाएँ 80 केन्द्रों पर आयोजित** की गईं। परीक्षा व्यवस्था की शुचिता एवं पारदर्शिता को बनाए रखने के लिए कुलपति जी ने समय–समय पर विभिन्न केन्द्रों पर चल रही परीक्षाओं का निरीक्षण किया। परीक्षा की शुचिता हेतु सभी परीक्षा केन्द्रों पर निरीक्षकों की समुचित व्यवस्था विश्वविद्यालय नियमानुसार सुनिश्चित कराई गई।

* **शैक्षणिक सत्र को नियमित** करने के लिए विश्वविद्यालय ने जुलाई, 2011 तथा जनवरी 2012 की सत्रांत परीक्षाओं के परिणाम समय से घोषित करने के प्रयास किए। अध्ययन केन्द्रों पर छात्रों की अंक तालिकाएं भी समयबद्ध ढंग से प्रेषित कराई गई जिससे वे शिक्षा एवं अपने कैरियर सम्बन्धी भावी योजनाओं को यथासमय पूर्ण कर सकें।

* नवीन सत्र से **अध्ययन केन्द्र समन्वयकों** के अधिकारों में वृद्धि की गई है, जिससे वे विश्वविद्यालय के उत्थान के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेंगे। वर्तमान सत्र से समन्वयकों को ही प्रवेश फार्म की अर्हता जाँच कर, प्रवेश लेने का अधिकार प्रदान किया गया है। इसके पश्चात

परिचय–पत्र निर्गत करने का अधिकार भी उन्हें ही सौंपा गया है।

* विश्वविद्यालय के हित में **अध्ययन केन्द्रों को अधिक सबल बनाने** तथा उनके क्रिया–कलापों का सुचारु ढंग से संचालन सुनिश्चित करने के लिए पाँचों निदेशकों को क्षेत्रीय निदेशक (ऑनरेरी) की जिम्मेदारी देते हुए उन्हें एक–एक क्षेत्रीय केन्द्र की देखभाल का अतिरिक्त कार्यभार सौंपा गया है जिससे सभी केन्द्र विश्वविद्यालय मुख्यालय के सीधे सम्पर्क तथा नियंत्रण में रहें।

* **अध्ययन केन्द्रों की निरीक्षण व्यवस्था** को विश्वविद्यालय ने सुदृढ़ किया है, जिससे समस्त शैक्षिक क्रिया कलापों में किसी प्रकार की विसंगति न उत्पन्न हो पाए। इसीलिए औचक निरीक्षण के दौरान अव्यवस्था पाए जाने पर कई केन्द्रों को निरस्त किया गया जिससे छात्र केन्द्रित व्यवस्थाओं की गुणवत्ता सुनिश्चित की जा सके।

* **क्षेत्रीय केन्द्रों को और सशक्त** एवं छात्र उपयोगी बनाने हेतु इस सत्र से प्रवेश आवेदन फार्म की कम्प्यूटर फीडिंग को क्षेत्रीय केन्द्रों पर कराने का निर्णय लिया गया है, जिससे अध्ययन केन्द्रों पर जमा हुए प्रवेश आवेदन–पत्रों की जाँच पुनः क्षेत्रीय केन्द्रों पर फीडिंग करते समय की जा सके। इस प्रकार की व्यवस्था के द्वारा विसंगतियों की संभावनाएँ कम से कम रहेगी।

* गम्भीर चिन्तन एवं पूर्व वर्षों के अनुभवों के परिणामस्वरूप सत्र 2011–2012 से विश्वविद्यालय की शैक्षिक व्यवस्थाओं में कई परिवर्तन किए गए हैं। **प्रवेश** एवं **अधिन्यास व्यवस्था का विकेन्द्रीकरण** करते हुए प्रवेश आवेदन–फार्मों की प्रविष्टि एवं अधिन्यास मूल्यांकन का कार्य क्षेत्रीय केन्द्रों पर कराने का निर्णय लिया गया है।

* **क्षेत्रीय केन्द्रों, अध्ययन केन्द्रों एवं विश्वविद्यालय के मध्य प्रभावी**

समन्वय स्थापित हो, इसके लिए क्षेत्रीय समन्वयकों की कार्यशालाओं की एक श्रृंखला आयोजित की गई जिससे समस्त शैक्षणिक व्यवस्था में पर्याप्त सुधार लाया जा सके और दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को अधिक सुदृढ़ तथा छात्रोपयोगी बनाया जा सके।

* विश्वविद्यालय के समस्त अध्ययन केन्द्रों की क्षेत्रीय केन्द्रवार कार्यशाला जून माह में अलग–अलग दिवसों पर आयोजित की गई। वर्तमान सत्र से हुए सभी नवीन परिवर्तनों की सूचना केन्द्र समन्वयकों/प्राचार्यों को दी गई। विश्वविद्यालय ने सत्र 2012–13 से **'वर्ष पर्यन्त प्रवेश'** की अवधारणा को मूर्त रूप प्रदान करते हुए अध्ययन केन्द्रों को सशक्त बनाने की दिशा में कई महत्वपूर्ण दायित्व प्रदान किये। प्रवेश, परीक्षा, अधिन्यास, परामर्श एवं अन्य शैक्षिक गतिविधियों की छात्रों एवं समन्वयकों को सम्यक् जानकारी देने हेतु दूरस्थ शिक्षा पद्धति पर आधारित एक **दिशा–निर्देशिका** का प्रकाशन किया। इस पुस्तिका में सभी **क्रिया–कलापों** के संचालन की रूप–रेखा का विस्तृत वर्णन किया गया है। इससे केन्द्र समन्वयकों को कार्य के सम्पादन में निश्चित ही सुविधा मिलेगी।

* कार्यभार ग्रहण करने के बाद से ही कुलपति जी दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षा के प्रचार–प्रसार तथा उसकी लोकप्रियता को बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील हैं। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली से संबंधित भ्रांतियों एवं संदेहों के निवारण एवं विश्वविद्यालय की समस्त गतिविधियों की सम्यक् जानकारी के लिए **'जिज्ञासा'** नामक पुस्तिका प्रकाशित की गई। इस पुस्तिका के माध्यम से अत्यन्त सरल शब्दों में सामान्य जन व शिक्षार्थी के मन में उठने वाली शंकाओं का समाधान प्रश्न–उत्तर के रूप में कराने का सार्थक प्रयास किया गया है। इस पुस्तिका का अंग्रेजी

संस्करण भी तैयार किया गया है।

* यह विश्वविद्यालय छात्रकेन्द्रित गुणवत्तायुक्त शिक्षा एवं परीक्षा में शुचिता तथा पारदर्शिता बनाए रखने के लिए कृतसंकल्प है। विश्वविद्यालय के सर्वांगीण विकास के लिए **सूचना एवं जन संचार तकनीकी (आई.सी.टी.)** की अहम भूमिका को स्वीकार करते हुए विश्वविद्यालय ई–रिसोर्स, ई–लर्निंग आदि की व्यवस्था को सुनिश्चित कराने हेतु प्रयासरत है।

* विश्वविद्यालय के सूचना एवं संचार तंत्र को मजबूत करने के लिए अधिकारिक वेबसाइट www.uprtou.ac.in को व्यवस्थित करते हुए छात्रोपयोगी **(स्टूडेन्ट फ्रेण्डली)** बनाया गया है। छात्रों से सम्बन्धित सभी सूचनाएं वेबसाइट पर उपलब्ध कराई जा रही है।

* **विश्वविद्यालय की समस्त प्रक्रियाओं** को ICT से जोड़ने की व्यवस्था लागू की जा रही है। अधिन्यास, पाठ्य–सामग्री तथा परीक्षा को ऑन लाइन कराने के लिए निरन्तर प्रयास जारी हैं। इसी क्रम में परीक्षाफल की घोषणा के उपरान्त छात्रों को ऑन लाइन **स्टेटमेन्ट ऑफ मार्क्स** दिए जाने की व्यवस्था को और बेहतर बनाया जा रहा है।

* विश्वविद्यालय ने फरवरी–2012 में **'फूड सिक्योरिटी एण्ड सस्टेनेबिलिटी ऑफ एग्रीकल्चर'** जैसे महत्वपूर्ण एवं समसामयिक विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का वृहत् आयोजन शैक्षणिक परिसर, फाफामऊ में किया। इस राष्ट्रीय सेमिनार में लगभग 80 शोध–पत्र पढ़े गए। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.ए.के.सिंह तथा विशिष्ट अतिथि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर आर.एस. दुबे ने एवं समापन सत्र में मुख्य अतिथि नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय के

कुलपति प्रो. के.पी.मिश्र ने खाद्य सुरक्षा एवं कृषि की संपोषणीयता पर अपने विचार व्यक्त करते हुए सेमिनार की सफलता पर विश्वविद्यालय को बधाई दी।

* **विश्वविद्यालय ने बी.एड. (विशिष्ट शिक्षा)** एवं **पी.जी.पी.डी.** के कार्यक्रम संचालित करने वाले अध्ययन केन्द्र समन्वयकों की कार्यशाला जून माह में ही भारतीय पुनर्वास परिषद् (आर.सी.आई.) के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित की। जिससे नवीन सत्र से संबंधित सभी नियमों एवं परिवर्तनों की जानकारी उन्हें दी जा सके।

* **विश्वविद्यालय ने कुलपति प्रो.ए.के.बख्शी** के कुशल दिशा–निर्देशन में **'षष्ठ दीक्षांत समारोह'** सफलतापूर्वक आयोजित किया। मुक्त एवं दूरस्थ प्रणाली पर आधारित शिक्षण संस्थान में इतने अधिक शिक्षार्थियों को उपाधि प्राप्त करते देखकर **महामहिम राज्यपाल श्री बी. एल. जोशी** जी ने प्रसन्नता व्यक्त की और विश्वविद्यालय की निरन्तर हो रही प्रगति के लिए बधाई दी। दीक्षान्त भाषण **पद्मश्री प्रो. हर्ष के. गुप्ता** ने दिया।

* **राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन स्मृति व्याख्यानमाला** के नवम् पुष्प का वृहत् आयोजन विश्वविद्यालय परिसर में सफलतापूर्वक किया गया। इस व्याख्यानमाला में प्रो. राजेन्द्र मिश्र, पूर्व कुलपति सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी; इलाहाबाद मण्डल के आयुक्त श्री मुकेश मेश्राम तथा जी.बी. पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, इलाहाबाद के पूर्व निदेशक प्रोफेसर आर.सी. त्रिपाठी जैसे विद्वज्जनों के विचारों से विश्वविद्यालय परिवार तथा इसमें अध्ययनरत शिक्षार्थियों के ज्ञान में निश्चित ही अभिवृद्धि हुई है।

* विश्वविद्यालय द्वारा 11 नवम्बर 2011 को भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री

मौलाना अबुल कलाम आजाद की जयन्ती पर **'शिक्षा में राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य'** (National Perspective in Education) जैसे समसामयिक विषय पर एक परिसंवाद का सफल आयोजन किया गया। इसमें मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, इलाहाबाद के निदेशक प्रोफेसर पी0 चक्रवर्ती, प्रसिद्ध शिक्षाविद् प्रो0 रामशकल पाण्डेय, प्रो0 एस0ए0 अन्सारी, प्रो0 हरिशंकर उपाध्याय तथा डा0 सुधा प्रकाश आदि ख्यातिलब्ध विद्वानों ने अपने विचारों द्वारा विश्वविद्यालय को लाभान्वित किया।

* 01 दिसम्बर 2011 को विश्वविद्यालय द्वारा **एड्स दिवस** पर जागरूकता कार्यक्रम में जन सामान्य को जागरूक बनाने हेतु एक डाक्युमेन्ट्री फिल्म का प्रदर्शन किया गया। इस अवसर पर एमिटी विश्वविद्यालय, नोएडा के प्रो0 नवल गुप्ता ने एड्स जैसी ज्वलंत समस्या से बचने के प्रयासों पर प्रकाश डाला।

* **शिक्षक दिवस** के अवसर पर विश्वविद्यालय में आयोजित समारोह में पूर्व राष्ट्रपति सर्वपल्ली डॉ. राधा कृष्णन का स्मरण किया गया। इस अवसर पर गुरु–शिष्य संबंधों को अधिक मजबूत बनाने की दिशा में शिक्षार्थियों को गुरु की महिमा से परिचित कराया गया।

* विश्वविद्यालय की ओर से आयोजित **राजर्षि टण्डन शिक्षक सम्मान–2011** के भव्य समारोह में प्रोफेसर जनक पाण्डेय, कुलपति बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय को राजर्षि टण्डन स्वर्ण पदक से सम्मानित कर विश्वविद्यालय ने राजर्षि जी के प्रति श्रद्धा–सुमन अर्पित किए गए और प्रो. पाण्डेय के सम्मान द्वारा विश्वविद्यालय गौरवान्वित हुआ।

* **गाँधी जयन्ती** के अवसर पर विश्वविद्यालय द्वारा एक वैचारिक गोष्ठी

आयोजित की गई। कुलपति प्रोफेसर बख्शी ने गाँधी जी के चित्र पर माल्यार्पण कर अपने उद्‌गार व्यक्त किए। इन क्रिया–कलापों के माध्यम से विश्वविद्यालय ने अपने छात्रों को अपने कर्त्तव्यों के प्रति सचेष्ट बनाने एवं नैतिकतापूर्ण आचरण करने की प्रेरणा देने का प्रयास किया।

* **गणतंत्र दिवस** के अवसर पर ध्वजारोहण के उपरान्त कुलपति महोदय ने विश्वविद्यालय परिवार को सम्बोधित करते हुए विश्वविद्यालय को शीर्ष तक पहुँचाने तथा इसे एक मानक विश्वविद्यालय बनाने हेतु अपना योगदान देने के लिए सभी का आह्‌वान किया तथा उन्हें अपने–अपने कर्त्तव्यों का स्मरण कराया।

* **पर्यावरण के महत्व** के प्रति लोगों को जागरूक करने के संदर्भ में विश्वविद्यालय के सुन्दरीकरण पर विशेष ध्यान दिया गया है और पूरे **कैम्पस को इको–फ्रैण्डली** बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निवर्हन किया जा रहा है। विश्वविद्यालय के मुख्यालय में पेड़–पौधे लगवाकर शैक्षिक परिवेश को अध्ययनमय और आकर्षक बनाने की दिशा में सक्रिय प्रयास किया गया है।

* दूरस्थ शिक्षार्थियों को अध्ययन के उपयुक्त अवसर मिलें, इसके लिए दुमंजिला **पुस्तकालय भवन** का शिलान्यास कर शिक्षार्थियों को अत्याधुनिक पुस्तकालय सुविधा से लाभान्वित कराने की वृहद योजना को रूपाकार प्रदान किया जा रहा है।

* **विश्वविद्यालय के शैक्षणिक परिसर** में तीसरे तल का निर्माण कार्य पूरा हो गया है। भलीभांति सुसज्जित इस तल में प्रबन्धन अध्ययन विद्याशाखा, कृषि विज्ञान विद्याशाखा तथा दूरस्थ शिक्षा अनुसंधान केन्द्र को स्थापित किया गया है। नवीन तकनीकियों पर आधारित

भौतिक सुविधाओं से सुसज्जित करते हुए विश्वविद्यालय परिसर में **'वाई–फाई'** सुविधा प्रारम्भ की गई है। इससे विश्वविद्यालय के प्रत्येक विभाग एवं अनुभाग सूचना एवं संचार तकनीकी का शत–प्रतिशत लाभ ले सकेंगे।

* विश्वविद्यालय परिसर में शिक्षार्थियों के हित को ध्यान में रखते हुए विकलांग विद्यार्थियों के लिए **लिफ्ट** की व्यवस्था की गई है। जिससे उनकी शिक्षा के मार्ग में किसी प्रकार का अवरोध न आए और वे सुविधापूर्ण ढंग से अपने पठन–पाठन में रुचि लेकर ज्ञानार्जन कर सकें।

* विश्वविद्यालय के कार्यों के समयबद्ध पालन एवं कार्यक्षमता में वृद्धि के लिए विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा **बायोमैट्रिक टाइम अटेन्डेन्स मशीन** लगाने का निर्णय लिया गया। इस व्यवस्था के अन्तर्गत नवम्बर 2011 से विश्वविद्यालय के तीनों परिसरों में उपस्थिति दर्ज कराने हेतु अटेन्डेन्स मशीन की व्यवस्था की गई। शिक्षकों एवं विश्वविद्यालय के कर्मचारियों के भीतर स्व–अनुशासन की भावना जागृत करने हेतु उठाया गया यह एक प्रभावी कदम है।

* **संगोष्ठियों, कार्यशालाओं एवं शैक्षिक सम्मेलनों** में अध्यापकों की भागीदारी को बढ़ाने तथा उन्हें अधिकाधिक अवसर प्रदान करने के लिए उनके यात्रा व्यय तथा पंजीकरण शुल्क आदि को विश्वविद्यालय द्वारा वहन किये जाने की योजना विचाराधीन है। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय के शिक्षकों में स्वस्थ शैक्षणिक प्रतिस्पर्धा को बढ़ाने एवं उनके अकादमिक उत्कर्ष को प्रोत्साहित करने के लिए प्रत्यके वर्ष योग्यता व कार्य निष्पादन के आधार पर चयनित किये गये शिक्षकों को सम्मानित करने की कार्ययोजना है।

* **विश्वविद्यालय में जिन विषयों** में कोई भी अध्यापक कार्यरत नहीं है, उन सभी विषयों में शैक्षणिक परामर्शदाताओं की नियुक्ति का कार्य प्रगति पर है। क्षेत्रीय केन्द्रों पर भी पूर्णकालिक क्षेत्रीय केन्द्र समन्वयकों की नियुक्ति विचाराधीन है।

* **विश्वविद्यालय द्वारा योग शिक्षा में डिप्लोमा** तथा फोरेन्सिक साइन्स में प्रमाण–पत्र कार्यक्रम को आरम्भ करने का निर्णय लिया गया। इतनी कम अवधि में ही **फोरेन्सिक साइन्स** जैसे महत्वपूर्ण एवं रोजगारपरक विषय की स्व–अध्ययन सामग्री विषय–विशेषज्ञों से तैयार करवा ली गई है तथा दूरस्थ शिक्षा परिषद् से इन कार्यक्रमों को प्रारम्भ करने का अनुमोदन प्राप्त कर यथाशीघ्र इन्हें प्रारम्भ करने की योजना अपने अंतिम चरण में है।

* **इस वर्ष से विश्वविद्यालय** को एम.फिल. एवं पी–एच.डी. कार्यक्रमों के पुनः संचालन की अनुमति UGC से प्राप्त हो चुकी है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में शोध एवं अनुसंधान के महत्व को दृष्टिगत रखते हुए एम0फिल0 एवं पी0एच0डी0 कार्यक्रमों को प्रारम्भ करने की रूप–रेखा को अंतिम रूप प्रदान किया जा चुका है। शीघ्र ही प्रवेश सम्बन्धी समस्त सूचनाएँ विज्ञापन के माध्यम से जनमानस हेतु सर्वसुलभ होंगी।

* **इस विश्वविद्यालय द्वारा दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के माध्यम से चलाए जा रहे बी0एड0 कार्यक्रम को माननीय उच्चतम् न्यायालय द्वारा संस्थागत बी0एड0 कार्यक्रमों के समतुल्य स्वीकार करने का आदेश पारित किया गया है।**

* **दूरस्थ शिक्षा के प्रचार–प्रसार** के लिए माघ मेला क्षेत्र में **दूरस्थ शिक्षा जागरूकता शिविर** लगाया गया, जिससे माघ मेला में आने वाले जन सामान्य को भी शिक्षा की इस नवीन विधा की जानकारी

प्राप्त हो सके। इसके लिए 'जादू' कार्यक्रम के माध्यम से दूरस्थ शिक्षा की उपयोगिता और विश्वविद्यालय के सन्दर्भ में प्रमुख जानकारियाँ प्रस्तुत की गईं। शिविर में शैक्षिक प्रदर्शनी के माध्यम से भी विश्वविद्यालय में संचालित हो रहे विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी दी गई।

* **'आन्तरिक गुणवत्ता सुनिश्चयन प्रकोष्ठ'** (CIQA) द्वारा विश्वविद्यालय के शैक्षिक एवं प्रशासनिक क्रिया–कलापों के गुणवत्ता पूर्ण संचालन एवं पारदर्शिता बनाए रखने के लिए प्रति वर्ष पुस्तिकाओं का प्रकाशन किया जाता है। इस श्रृंखला में इस वर्ष **'प्रवेश'** तथा **'परीक्षा'** पर आधारित पुस्तिकाओं का प्रकाशन किया गया है।

* दूरस्थ शिक्षा को गुणवत्ता युक्त बनाने हेतु **दूरस्थ शिक्षा अनुसंधान केन्द्र** द्वारा सर्वेक्षण आधारित रिर्पोट **''शिक्षार्थी सहायता सेवाएं''** तैयार की गयी, जिसके प्रकाशन का कार्य चल रहा है।

* **विश्वविद्यालय ने एक सत्र में राष्ट्रीय** एवं प्रदेश स्तर की तीन परीक्षाएँ शान्तिपूर्ण एवं नियमबद्ध ढंग से संचालित कीं। डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद द्वारा संचालित संयुक्त **प्रवेश परीक्षा बी.एड.–2012** तथा संयुक्त पात्रता परीक्षा **पी–एच.डी.–2012** और छत्रपति शाहू जी महाराज चिकित्सा विश्वविद्यालय, लखनऊ द्वारा संचालित **सी.पी.एम.टी.–2012** के लिए विश्वविद्यालय को नोडल केन्द्र बनाया गया। उक्त तीनों ही परीक्षाओं को विश्वविद्यालय ने सफलतापूर्वक सम्पन्न कराया।

* **महामहिम कुलाधिपति द्वारा इलाहाबाद उच्च न्यायालय** के न्यायाधीश माननीय **न्यायमूर्ति श्री कृष्ण मुरारी** तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालय के रसायन शास्त्र विभाग के पूर्व अध्यक्ष **प्रो एम0सी0 चट्टोपाध्याय**

को अप्रैल 2012 में **कार्य परिषद् का सदस्य** नियुक्त किया गया। इसी क्रम में भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान, इलाहाबाद (I.I.I.T.) के निदेशक डॉ0 **एम0डी0 तिवारी**, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति **प्रो0 एच0पी0 तिवारी,** एन.सी.ई.आर.टी. (NCERT), नई दिल्ली के आचार्य एवं डीन समन्वयन **प्रो. डी.के. वैद्य** तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ ओपेन लर्निंग के कार्यकारी निदेशक प्रो0 एच0सी0 पोखरियाल को अप्रैल 2012 से विद्या परिषद् का सदस्य नामित किया गया।

* **कुलपति प्रो. ए.के. बख्शी के ज्ञान–कौशल, सूक्ष्म दृष्टि तथा त्वरित निर्णयन क्षमता के कारण उन्हें मई 2012 में उ0प्र0 ऑडिट एडवाइजरी बोर्ड में दो वर्ष के लिए सदस्य नामित किया गया।**
* **प्रो0 ए0के0बख्शी जुलाई 2012 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (B.H.U.) के विद्या परिषद् में तीन वर्षों के लिए सदस्य नामित किए गए। साथ ही मार्च, 2012 में भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान, इलाहाबाद (I.I.I.T.) की विद्या परिषद में दो वर्ष के लिए सदस्य नामित किए गए।**
* **कुलपति प्रो0 ए0के0बख्शी ने 15–17 दिसम्बर 2011 तक कोचीन युनिवर्सिटी ऑफ साइंस एण्ड टेक्नालॉजी कोच्चि, केरल में एसोएिशन ऑफ इण्डियन युनिवर्सिटीज (ए0आई0यू0) के 86वीं वार्षिक अधिवेशन में प्रतिभाग कर विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाया।**
* **कुलपति प्रो0 ए0के0बख्शी ने कर्नाटक स्टेट ओपेन युनिवर्सिटी की तरफ से 20–22 दिसम्बर 2011 को आयोजित तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस ''ओपेन एण्ड डिस्टेन्ट लर्निंग इन ग्लोबल इनवायरमेण्ट्स इश्यूज एण्ड चैलेन्जेस'' में विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया।**

* **कुलपति प्रो0ए0के0बख्शी को उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के तत्त्वावधान में आयोजित 'इनिशिएटिव पॉलीसिज एण्ड गवर्नेंस' विषय पर आयोजित गोष्ठी में व्याख्यान हेतु आमंत्रित किया गया।**
* **जनवरी 2012 में के.आई.आई.टी., भवनेश्वर में प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की अध्यक्षता में आयोजित 99वीं इंडियन साइंस कांग्रेस के केमिकल साइंस सत्र में कुलपति प्रो0 ए.के.बख्शी ने अध्यक्षीय उद्‌बोधन दिया। प्रो0 बख्शी के निर्देशन में देशभर के विद्वानों तथा वैज्ञानिकों के गूढ़ शोधपत्रों का सफल प्रकाशन संभव हो सका।**
* **कुलपति प्रो0 ए0के0बख्शी को C.B.S.E.I की सलाहकार समिति में शिक्षा में अन्तरराष्ट्रीय मानकों को समाहित करने के लिए सदस्य नियुक्त किया गया।**
* **विश्वविद्यालय के विकास क्रम में कुलपति महोदय का असाधारण योगदान है। उनके प्रयत्नों, दिशा–निर्देशन एवं शीघ्र निर्णयन क्षमता के फलस्वरूप ही विश्वविद्यालय निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर है। आपकी अति विशिष्ट उपलब्धियों ने विश्वविद्यालय को उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए प्रेरित किया है। ''छात्र जहाँ, हम वहाँ'' की संकल्पना को साकार करते हुए इस विश्वविद्यालय ने उच्च शिक्षा के क्षितिज पर अपना विशिष्ट स्थान स्थापित किया है।**